लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का सिवनी जिले की राजनीति पर प्रभाव

* अतुल गुप्ता

l:r fugkyfl:g d: erku:lkj

''यदि तिलक न होते तो शायद भारत अभी भी धूल में माथा टेके और हाथ में प्रार्थना पत्र लिये पेट के बल घिसट रहा होता। उन्होंने भारत को रीढ़ की हड्डी के बल खड़ा किया''[1] ''लोकमान्य की पदवी से विभूषित श्री बालगंगाधर का व्यक्तित्व विविधांगी था। 19वीं सदी के अंतिम दो दशकों और 20वीं सदी के प्रारंभिक दो दशकों में तिलक ने अपने विचारों और कार्यकलापों द्वारा तत्कालीन भारतीय समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर जो प्रभाव डाला वह अविस्मरणीय रहेगा। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ और निर्भीक सेनानी थे, और उनकी सारी कियाए देशभक्ति और राष्ट्रीयता की भावन से प्रेरित थीं। समय की मांग के साथ उनके विचार और उनका किया क्षेत्र विकसित होता गया, यहां तक कि एक दिन उन्होंने यह घोषित कर दिया कि ''स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूंगा''। अपने जीवन उद्देश्य में परम निष्ठा और उसकी प्राप्ति के लिए मस्तिष्क की गतिशीलता उनका विशेष गुण था जिसने शीघ्र ही उन्हें पहले महाराष्ट्र और बाद में भारतीय जनता का सिरमौर बना दिया। इस महान विभूति का जन्म 23 जुलाई 1856 को रत्नगिरी जिले में, चितपावन ब्राम्हण परिवार में हुआ था। उनके पिता गंगाधर पंत प्रारंभ में शिक्षक और बाद में डिप्टी इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स बने। उनके परदादा केशवराव अंतिम पेशवा के शासनकाल में मामलतदार थे। बालगंगाधर तिलक की मॉ पार्वती बाई दयालु और धार्मिक स्वभाव की थी, किन्तु वे 10 वर्ष की आयु में ही तिलक को छोड़कर चली गई। तिलक भी अपनी माँ के समान धर्मनिष्ठ व्यक्ति बने।

बाल्याकाल से ही तिलक प्रखर बुद्धि थे। सन् 1879 एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात महाविद्यालयीन जीवन से उनकी रूचि सार्वजनिक कार्यो की और बढने लगी। सार्वजनिक जीवन के चार दशकों में तिलक की शक्तियॉ विभिन्न गतिविधियों और कार्यो में जागृत हुई। शिक्षा शास्त्री के रूप में आपने पूना न्यू इंग्लिश स्कूल, दक्षिण शिक्षा समाज तथा फरग्यूसन कॉलेज के व्यवस्थापक के रूप में मान सम्मान प्राप्त किया तिलक ने आर्थिक अन्याय के विरूद्ध लोहा लिया 1896 के अकाल में लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने की दिशा में इन्होने महत्वपूर्ण कार्य किया। [2] उनका सार्वजनिक जीवन एक शिक्षक और शिक्षा शास्त्री के रूप में प्रारंभ हुआ और धीरे–धीरे पत्रकारिता और राजनीति में उसकी अभिव्यक्ति हुई। सर्व प्रथम तिलक विष्णुशास्त्री चिपणुंकर तथा उनके अन्य सहयोगियों ने मिलकर 1 जनवरी 1880 को पूना में एक न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना की यह स्कूल 19 छात्रों से प्रारंभ हुआ था किन्तु पाँच वर्षो के अन्दर ही शिक्षकों एवं संस्थापकों के अथक प्रयासों से इसकी संख्या बड़कर 1200 पहुंच गई। जहाँ तक शैक्षणिक स्तर का प्रश्न है इसकी तुलना किसी भी अन्य स्कूल से की जा सकती थी।[3] 24 अक्टूवर 1884 को दक्षिण शिक्षा समाज और 2 जनवरी 1885 को पूना में फरग्यूशन कॉलेज की स्थापना के पीछे भी तिलक का बहुत बड़ा हाथ था। इन शिक्षण संस्थाओं ने महाराष्ट्र में वास्तव में एक शैक्षणिक क्रान्ति प्रारंभ कर दी और लोगों का ध्यान राष्ट्रीय स्कूलों की ओर आकर्षित होने लगा। किन्तु तिलक के जीवन का उद्देश्य शिक्षण संस्था तक ही सीमित न रहा, सफल राष्ट्रीय आंदोलन के लिये जन साधारण की शिक्षा भी परम आवश्यक थी। जिसका साधन उस समय पत्र–पत्रिकायें ही हुआ करती थी। जनता में नव जागृति और चेतना पैदा करने के उद्देश्य से अवसर पाते ही तिलक ने चिपणुकंर, आगरकर और नाम जोशी के सहयोग से जनवरी–1881 में अंग्रेजी साप्ताहिक मराठा और मराठा साप्ताहिक केशरी का प्रकाशन प्रारंभ किया यह पत्र न्यू इंग्लिश स्कूल की सम्पत्ति थे और निर्भीक पत्रकारिता के कारण सरकारी लेखों में इन पत्रों को सरकार के अमित्र की संज्ञा दी जाती थी। [4] क तिलक की मुख्य राजनैतिक कर्मभूमि महाराष्ट्र थी उन्होने सदियों से गुलामी के मौह में सोयी हुई जन आत्मा को राष्ट्रीय उद्देश्यों की ओर जगाया इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उन्होने सभी सम्भव और उपलब्ध साधनों का प्रयोग किया उस समय के वातावरण में नितांत राजनैतिक माध्यमों से राष्ट्रीयता की भावना पैदा करने का प्रयास राजद्रोह समझा जाता था। श्री तिलके ने शिवाजी उत्सव और गणेश उत्सव के अवसर पर जो कवितायें पड़ी और जो लेख प्रकाशित कराये उन्हें सरकार ने आपत्तिजनक मानकर तिलक पर मुकदमा चलाया। [5] श्री तिलक को अपने जीवनकाल में तीन वार जेल की यात्नायें सहनी पड़ी सर्व प्रथम 1882 में श्री तिलक और आगरकर को एक मानहानि के दावे में 4 महिने की सजा हुई। दूसरी वार 1897 में जव पूना में प्लेग फैला और सरकार ने जनता के कष्टों के निरावरण करने के नाम पर नौकरशाही को निरंकुश शासन की छूट दी उस समय सरकार की नीति से रूष्ट होकर दो नव युवकों ने पूना के प्लेग कमिश्नर रेंड तथा मिस्टर आयर्स्ट अधिकारी की हत्या करदी उसी समय तिलक ने अपने पत्रों में सरकार की आलोचनायें प्रकाशित की थी। सरकार अवसर ढूड़ ही रही थी वह तिलक के ऊपर हिंशा और राजद्रोह भड़काने का आरोप लगाने से न चूके, खींच तानकर उनके विरूद्ध मुकदमा चलाया गया और 18 माह का कठोर कारावास का दण्ड उन्हें दे दिया गया यह सचमुच अन्यायपूर्ण निर्णय था। जिसकी इंगलेण्ड के पत्र ''डेली क्रोनिकल'' भर्त्सना की [6] अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के प्रति दुरव्यवहार, कर लगान बसूल करने में अत्याचार और उनकी दमन नीति से जनता क्षुब्ध थी उग्रवासियों ने ''स्वदेशी'' और ''बहि कार'' का राष्ट्र व्यापी आंदोलन प्रारंभ किया और स्वराज का संदेश जन–जन तक पहुंचाया जाने लगा। देश में उग्रवादियों का समर्थन बड़ रहा था किन्तु कॉग्रेस में अभी भी उदारवादियों का ही वहुमत था, 1906 में कलकत्ता में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन में तिलक को अध्यक्ष बनाने की पहल की गई थी लेकिन उदारवादियों ने दादा भाई नोरोजी को चुना इस अधिवेशन में स्वदेशी, बहि कार और रा ट्रीय शिक्षा के संबंध में भी प्रस्ताव पारित किये गये [7]

किन्तु धीरे–धीरे उदारवादियों और उग्रवादियों के मध्य खाई बड़ती गई और 1907 में कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में दोनों दलों में फूट पड़ गई, फूट का कारण यही था कि उदारवादी गत वर्ष के अधिवेशन में पास किये गये प्रस्तावों को नर्म बनाना चाहते थे। जिस पर उग्रवादी किसी भी कीमत पर तैयार न थे। तिलक ने यह नारा लगाया कि ''स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार'' और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये कठारे तप करते रहें। सन 1915 से उदारवादियों और उग्रवादियों में समझौते की स्थिति पैदा होने लगी थी। और 1916 में तिलक पुनः कांग्रेस में सम्मिलित हो गये और अन्त तक कांग्रेस से संबद्ध रहे किन्तु इसी बीच जून–1916 में तिलक ने लंदन में भारत के लिये ''होम

अतिथि व्याख्याता (इतिहास) शासकीय माधव महाविद्यालय, चन्देरी

रूम लीग'' की स्थापना की बाद में यह समझोता हुआ कि लीग मध्य प्रान्त और मुंबई में काम करेगी। और वांकि देश में श्रीमती एनीविसेन्ट की लीग कार्य करेगी। [8]

आरंभिक दिनों के राष्ट्रीय मंच पर श्री तिलक का अदभुत स्थान था। और लोग स्नेह एवं सम्मान से उन्हें ''लोकमान्य'' जनता के प्रिय नायक "सर्व सम्मानित" कहकर पुकारते थे। लोकमान्य तिलक का राजनीति मंच स्वशासन मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और में उसे लेकर रहूंगा, अधिकांश सजग भारतीयों के ओंठो पर था तिलक वे पहले नेता थे जिन्होने राजनीति आंदोलन को शक्तिशाली बनाने के लिये धार्मिक जोश का प्रयोग किया। तिलक भारतीय राजनीति में एक उग्रवादी नेता के रूप में रहे, वे जीवन के प्रत्येक पहलू में खरे उतरे इन्होने यथार्थ और आदर्श दोनों का निर्वाह किया। [9] लोक मान्य तिलक की स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित गतिविधियों का प्रवाह सिवनी जिले की राजनीति पर भी पड़ा है। 1857 में भारतीय आकाश प्राकृतिक संकटों का पहाड़ टूटा, भूकंप व प्लेग की महामारी के काले साये छाये हुये थे, राजनीति वातावरण में राजनैतिक हत्याओं, बाल गंगाधर तिलक की कैद, राजनीति कार्यकर्ताओं के निश्कासन तथा स्वशासन संस्थाओं के अधिकार क्षेत्र में संकीर्णता की नीति से उथल–पुथल मची हुई थी। हालांकि तिलक अपनी कांग्रेस अधिवेसनों के भाषणों तथा दो पत्रिकाओं मराठा एवं केसरी माध्यम से अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे। किन्तु भारतीय राजनीति में 1917 में वे नये नक्षत्र की भांति चमके।[10] तिलक पहले व्यक्ति थे जिन्होने यह अनुभव किया की भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्रता दिलाने के लिये सर्व प्रथम राष्ट्रीयता की भावना पैदा करके अखिल भारतीय स्तर पर एकता स्थापित करना आवश्यक है। क्योंकि राष्ट्रीयता की संकीर्ण भावना के कारण ही देश छोटी–छोटी रियासतों में वटकर कमजोर हो गया था। और विदेशी भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित करने में सफल हुये थे। और इसी भावना के अभाव के कारण अंग्रेज भारत पर अपना क्रूर शासन बनाये हुये थे। उदारवादियें की अनुनय विनय की नीति से भारत में स्वशासन की स्थापना कभी हो सकेगी इसमें उनकी आस्था लेस मात्र भी न थी। और इसलिये उन्होने रा टवादी चिन्तन और कार्यक्रम पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। सन् 1904 में तिलक जी के निवास स्थान पर एक बैठक आयोजित की गई थी जिसमें यह निश्चय किया गया कि अवसर आने पर तिलक जी द्वारा किये कार्यो में पूर्ण समर्थन दिया जायेगा। इस बैठक में शीर्षस्थ नेताओं के साथ मध्यप्रदेश के सर्वश्री दादा साहेब खापर्डे, डॉ. मुंजे एवं नीलकंठ राव उद्धव जी उपस्थित थे। इन उपस्थित नेताओं ने एक मत से निश्चय किया कि मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में भाषणों एवं प्रचारों के माध्यम से जनता में तिलक जी के विचारों का प्रयास किया जावे। इसके लिए समचार पत्रों को माध्यम बनाया गया। जिन समाचार पत्रों का विशेष योगदान था उनमें "सुबोधसिंधु" यवतमाल का, "हरिकेशोर" नरसिंहपुर का, "आर्यसवेक" जबलपुर का, जबलपुर टाइम्स और शुभचिंतक का नाम विशेष उल्लेखनीय है। [11] सर्वश्री रविशंकर शुक्ल, वामन राव लाखे, ठाकुर हनुमान सिंह और श्री लक्ष्मण राव उदगीरकर की गिनती लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के समर्थक गरम विचारधारा को मानने वालों में थी। लोकमान्य तिलक एवं श्री अरविंद के लेखों को छापने एवं दूसरे अभियोगों पर मध्यप्रदेश सरकार ने कुछ मामले चलाये और प्रदेश की नई चेतना को दबाने का प्रयास किया। प्रदेश की चीफ कमिश्नर सर रेजीनाल्ड क्रडॉक ने रा ट्रीय चेतना को पूरी तरह से कुचलने का प्रयत्न किया परन्तु वह पूरी तरह सफल न हो सके। [12] पं. रविशंकर जी शुक्ल प्रारंभ से ही लोकमान्य तिलक की विचारध ।ारा के समर्थक थे। लोकमान्य तिलक ने कांग्रेस से पूर्व बेलगांव में 29 अप्रैल 1919 को होमरूल लीग की स्थापना की। शुक्ल जी रायपुर शाखा के एक प्रमुख संगठनकर्ता बन गए थे। शुक्ल जी राष्ट्रीय संगठन के निर्माण में राष्ट्र भाषा एवं प्रादेशिक भाषा के रूप में हिन्दी की सर्वागीण उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। [13] तिलक की मुख्य राजनीति कर्मभूमि महाराष्ट्र थी। उन्होंने सदियों से परतंत्रता के मोह में सोई हुई जनआत्मा को राष्ट्रीय उद्‌देश्यों की ओर जाग्रत किया। इस उद्‌देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होने सभी संभव और उपलब्ध साधनों का प्रयोग किया। उस समय के वातारवरण में नितांत राजनैतिक माध्यमों से राष्ट्रीयता की भावना पैदा करने का प्रयास राज्यद्रोह समझा जाता था (आगे चलकर उन पर राजद्रोह का अभियोग भी लगाया गया था) अतः उन्होंने गणपति उत्सव तथा शिवाजी उत्सव जैसे धार्मिक और सांस्क तिक माध्यमों द्वारा तथा गौवध विरोधी समितियों, अखाड़ों और लाठी क्लबों के माध्यम से देशभक्ति की भावना भरने और नवयुवकों को स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए साहसी और सक्षम बनाने का प्रयास किया और सफलता भी प्राप्त की। इस धार्मिक माध्यम का उपयोग उन्होने अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्त करने और देशवासियों में एकता का भाव जागृत करने के उद्‌देश्य से किया था, किंतु जहां तक हिन्दुओं और मुस्लमानों के पारस्परिक संबंधों का प्रश्न है उनका दृष्टिकोण धर्मनिरपेक्ष था। उन्होने सदैव इस बात पर जोर दिया कि सच्चा हिन्दू धर्म एवं सच्चा इस्लाम धर्म इन दो धार्मिक समुदायों में द्वेष और बैर का भाव नहीं सिखाता बल्कि दूसरी ओर सच्चा धर्म कर्तव्य परायणता की ओर प्रेरित करता है।[14] कांग्रेस की स्थापना के बाद गरम दल–नरम दल का संघर्ष शुरू हुआ। लोकमान्य तिलक तीन बार जबलपुर पधारे, सर्वप्रथम सन् 1917 में लखनऊ में कांग्रेस में भाग लेने हेतु जबलपुर रूके। इन्होने अलफखॉ की तलैया पर एक सार्वजनिक सभा में भाषण दिया। इस सभा की स्मृति को बनाये रखने के लिये इस तलैया का नामकरण आगे चलकर "तिलक भूमि" कर दिया गया। प्रदेश में इस तलैया की स्वतंत्रता आंदोलन में ऐतिहासिक भूमिका रही। तिलक के प्रादुर्भाव के साथ ही पंजाब, बंगाल, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र तथा अन्य प्रांतों में भी हिंसा की राजनीति को संजीवनी मिली। [15] वास्तव मे ंतिलक का क्रान्ति में अविश्वास नहीं था पर देश की तत्कालीन परिस्थितियों में से क्रान्तिकारी साधनों को उचित नहीं समझते थे इसलिये इसका उन्होने कभी उपदेश भी नहीं दिया। स्वदेशी और बहि कार ये दो हतियारों को तिलक ने ही लोकप्रिय बनाया था। इन्होने स्वदेशी के संदेश को महारा ट्र और बरार के कौने–कौने तक पहुंचा दिया था। स्वदेशी का आरंभ उदारवादियों ने एक आर्थिक आंदोलन के रूप में किया था लेकिन उग्र राष्ट्रवादियों विशे ाकर तिलक के हाथों में यह एक राजनैतिक अस्त्र बन गया।[15] गरम दल के नेता असहयोग आंदोलन में आस्था नहीं रखते थे किन्तु तिलक की मृत्यु के बाद उनके दृष्टिकोण में कुछ अंतर आया। 22 अगस्त 1920 को मध्यप्रांत की प्रांतीय कांग्रेस समिति ने एक प्रस्ताव पास करके असहयोग को स्वीकार कर लिया किन्तु यह भी कहा कि फिलहाल नागपुर के लोग ब्रिटिश माल के बहि कार के लिए तैयार हैं। कलकत्ते के विशेष कांग्रेस अधिवेशन में भी मध्यप्रांत और बरार के लोगों ने श्री गांधी के प्रस्तावों का विरोध किया था। किन्तु अंत में संभवतः बी.जे. पटेल के नागपुर प्रवास ने लोगों का प्रभावत किया और लोग इस आशा में कि संभवतः एक–दो वर्षो में होमरूल मिल जायेगा, असयोग के समर्थक बन गए और पार्टी के हित में उन्होंने अपने व्यक्तिगत विचारों को भावी नहीं होने दिया। मिश्र और आयरलेंड की स्वतंत्रता ने भी लोगों की आस्था असहयोग में पैदा की। प्रांत में असहयोग आंदोलन का प्रथम प्रभाव था। आगामी परिषदीय चुनावों का बहि कार केवल खपर्डे ने अपना नाम राज्य परि द के चुनाव से वापिस नहीं लिया। कुछ गरम दल के नेता इस आशा में थे कि आगामी

नागपुर अधिवेशन में कोई वैकल्पिक असहयोग योजना सामने आयेगी। प्रांत में प्रारंभ में असहयोग आंदोलन धीरे चला। दिसम्बर–1920 तक लगभग 7 लोगों ने ही अपनी उपाधियॉं त्यागीं और आधे दर्जन लोगों ने ऑनरेरी मजिस्ट्रेट के पद त्यागे। स्कूलों और कालेजो में कोई गंभीर समस्या अभी तक पैदा नहीं हुई थी केवल जबलपुर के कुछ स्कूलों में नवम्बर में कुछ समस्या पैदा हुई थी। कुछ रा ट्रीय स्कूल प्रारंभ किये गए थे लेकिन नागपुर के अंजुम हाई स्कूल का रा ट्रीयकरण संभव नहीं हो सका था।[16] सिवनी में भी इस आंदोलन का प्रभाव पड़ा। छात्र आंदोलन की शुरूआत श्री कुंज बिहारीलाल खरे द्वारा की गई और स्कूलों का बहि कार किया गया और पूज्य गांधीजी के नाम गांधी राष्ट्रीय स्कूल प्रारंभ किया गया था। इस रा ट्रीय स्कूल को चलाने हेतु सर्वश्री स्व. पी.डी. जटार, स्व. शिवप्रसाद वर्मा, स्व. गिरजानन्द एडवोकेट, कमलाकर जटार, श्री ठाकुर मोहन सिंह, स्व. पं. सुंदरलाल मिश्रा, मुरलीधर शुक्ला, बालाजी टोले, स्व. प्रेमशंकर पंडया, स्व. बाबू भीमसेन का योगदान रहा। इस राष्ट्रीय स्कूल को चलाने हेतु, ध ान एकत्र करने हेतु कुछ राष्ट्रीय नाटक भी टिकिट लगाकर खेले गये। [17] तिलक ने स्वयं शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करके उन्हें उपयुक्त आदर्शो पर चलाने का प्रयास किया था इसके लिए उन्होंने श्रम भी किया और त्याग भी, और देखते ही देखते दूसरे लोग भी तिलक और उनके साथियों से प्रेरणा लेने लगे और राष्ट्रीय विद्यालयों की संख्या बढने लगी और राष्ट्रीय आंदोलन को बल प्राप्त हुआ। तिलक के बाद संभवतः आज फिर हम पहली बार शिक्षा को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने की समस्या पर विचार करने के लिए बाध्य होते दिखाई दे रहे हैं। निःसंदेह कोई भी शिक्षा जिसका तत्कालीन जीवन को ऊपर उठाने से संबंध न हो वह व्यर्थ है। तिलक ने लिखा था ''हमारी स्थिति मे शिक्षित भारतीयों का प्रमुख कर्तव्य देशवासियों को उनके कष्टों के प्रति जागरूक बनाना और उनके निराकरण के लिए कानूनी उपाय सुझाना है, इस कर्तव्य का निर्वाह करते हुए हमें शासकों द्वारा हमारे ऊपर लागू किये गए कानूनों का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए''। [18] लोकमान्य तिलक का जन्म परतंत्र भारत में हुआ था अतः यह स्वाभाविक था कि उनका राजनैतिक चिंतन इस परातंत्रता की दशा से सीमित हो। इस सीमा का अर्थ यह है कि समय की मांग के कारण उनका चिंतन तार्किक और दार्शनिक कम तथा व्यवहारिक अधिक था। वे जनपीड़ा से प्रभावित उदान्त स्वभाव के व्यक्ति थे, और इसीलिए उन्होने जीवन भर अपने समय की अंग्रेजों की परतंत्रता पैदा होने वाली समस्याओं से जूझने में रूचि ही नहीं ली वरन् उसे अपना धर्म समझा। उनका प्रयास निस्फल नहीं हुआ और शीघ्र ही वे भारतीय राजनीति को एक नया मोड़ दे सकने में समर्थ हुए जिससे भारतीय जनता की आकांक्षाओं और उद्देश्यों की पूर्ति में अत्यधिक सहायता प्राप्त हुई। तिलक ने अपने समय और देश की मूलभूत समस्या, परतंत्रता व उस पर अवलम्बित विभिन्न प्रश्नों को अपने चिंतन और कर्म का क्षेत्र बनाया। इसीलिए उनका दर्शन आलोचनात्मक है, तथा उसमें संघर्ष का पुट है और उन्हें उग्रवादी विचारधार का जनक माना जाता है। निःसंदेह भारतीय जनता में राजनैतिक जागृति पैदा करने में तिलक का बहुत बड़ा योगदान है और गांधी जी के पहले राष्ट्रीय आंदोलन को सबसे अधिक उन्होने ही प्रभावित और प्रेषित किया। [19]

पहली अगस्त 1920 को तिलक की म त्यु हो गई और संयोग से इसी दिन गांधी जी ने अपना सत्य और अहिंसा का आंदोलन शुरू किया। इसी आधार पर यह मिथ्या धारणा फैलाई गई कि'' जहाँ तिलक युक समाप्त हुआ वहीं से गांधी युग की शुरूआत होती है'' गांधी जी ने तिलक की ही परम्परा और नीतियों को आगे बढाया है और गांधी के नेतृत्व में भारत ने स्वराज्य प्राप्त कर लिया। [20]

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. उद्धत्व करन्दीकर एस.एल.–लोकमान्य बालगंगाधर तिलक सिद्धमोहन आर्ट, खेतबाड़ी बाम्बे, प .650
2. डॉ. अवस्थी, अमरेश्वर रामकुमार – आधुनिक भारतीय समाज एवं राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साइंसेस, 1974–75 प . 287
3. टोलीवाल, डी.आर. – भारत वर्ष की विभूतियॉ, ग्रेट इंडिया पब्लिशर्स नागपुर, 1954, प . 78
4. टग्रवाल, आर.सी.–भारतीय संविधान का विकास तथा रा ट्रीय आंदोलन, एस. चंद एन्ड कं. लिमि. नई दिल्ली, 1977, प. 433
5. डॉ. बिमलेश तथा भंडारी आनन्द चंद– भारतीय रा ट्रीय आंदोलन और नया संविधान आगरा, 1971 प. 58
6. नगपाल, डॉ. ओमप्रकाश–भारत का रा ट्रीय आंदोलन, संवैध ाानिक विकास और संविधान, इंदौन 1979, प.40
7. श्रामगोपाल–लोकमान्य तिलक, एशिया पब्ल, हा. बाम्बे, 1965 प. 382
8. मिश्रा, डी.पी.–मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास, ग्वालियर, 1956, प. 207
9. डॉ. अवस्थी अमरेश्वर, अवस्थी रामकुमार–आधुनिक भारतीय, सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साइंसेस, 1974–75 प. 286
   श्रामगोपाल–भारतीय राजनीति (विक्टोरिया से नेहरू तक) 1858 से 1947, ज्ञानमंडल लिमि., संवत् प. 129
10. मिश्रा डी.पी.–मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास, शासकीय मुद्रणालय, ग्वालियर, पृ. 211
11. श्री शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ–जीवनी खंड, मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, रामगोपाल माहेश्वरी, नागपुर, 2 अगस्त 1955, पृ. 10
12. –वही–प.12
13. रामगोपाल–लोकमान्य तिलक, ऐशिया पब्ल. हा. बाम्बे, 1965 प.195–96
14. स्वाधीनता आंदोलन विशेषांक–मध्यप्रदेश संदेश, प्रकाशन शाखा, जनसम्पर्क संचालनालय, 15 अगस्त 1987, भोपाल, पृ. अ–95
15. डॉ. अवस्थी अमरेश्वर, अवस्थी रामकुमार–आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, रिसर्च पब्लिकेशन एंड सोशल साइंसेस, 1974–75, प . 313
16. होम पोलीटिकल 1925, फाईल नं. 185, प . 85
17. म.प्र. संदेश, स्वाधीनता आंदोलन विशेषांक, प्रकाशन शाखा, जनसम्पर्क संचालनालय, 15 अगस्त 1987, भोपाल, पृ. अ–106
18. करंदीकर एस.एल.–लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, प. 143 सिद्धमोहन आर्ट, खेतबाड़ी, बाम्बे
19. रामगोपाल–लोकमान्य तिलक, एशिया पब्लिशिंग हाऊस, प. 110
20. रहबर हंसराज–तिलक से आज तक, निधि प्रकाशन, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली, 1980 प. 103